Class – T.D.C. Part II

Paper – IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(History of Western Philosophy)

Topic — स्पिनोजा – द्रव्य-विचार
(Spinoza – Substance)

डॉ॰ पूनम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
आर॰ एन॰ कॉलेज

स्पिनोजा — द्रव्य-विचार
(Spinoza — Substance)

प्रसिद्ध दार्शनिक स्पिनोजा ज्ञान का
मूल स्रोत बुद्धि को मानते हैं तथा इसकी प्राप्ति सहज या
जन्मजात होती है। उनके अनुसार मूल सत्ता द्रव्य है जो
अपने अस्तित्व एवं ज्ञान के लिए स्वयं पर आधारित
है। उन्होंने द्रव्य को स्वतन्त्र एवं निरपेक्ष कहा है। द्रव्य
को स्वतन्त्र कहने का अर्थ मनमानी करना नहीं है, अपितु
वह स्वयं के बनाये हुए नियमों से बँधा है तथा सभी
प्रकार के बाहरी नियंत्रण से मुक्त है। द्रव्य को अपने
अस्तित्व या ज्ञान के लिए किसी की अपेक्षा नहीं रहती,
इसलिए वह निरपेक्ष कहलाता है। किसी पर आश्रित
नहीं रहने से द्रव्य स्वतःसिद्ध है तथा स्वयं में अद्वितीय
एवं स्वयंभू है। द्रव्य को स्वयंभू कहने का अर्थ यह

नहीं है कि वह स्वयं से उत्पन्न है, बल्कि उसका कोई कारण नहीं है, वह अकारण है। उसका न कोई आरंभ है और न ही कोई अन्त अर्थात् वह अनादि एवं अनन्त है, इसलिए द्रव्य का स्वरूप नित्य होता है। इस सम्पूर्ण सृष्टि में जो कुछ भी है, सब उस द्रव्य में समाया हुआ है, इसलिए वह अपरिमित या असीम है। उसका कोई विभाजन नहीं हो सकता, विभाजन केवल सीमित पदार्थों का हो सकता है। अतः द्रव्य असीम होने के साथ अविभाज्य भी है।

स्पिनोजा ने द्रव्य के जो स्वरूप या लक्षण बतलाये हैं, ये सभी ईश्वर के स्वरूप या लक्षण हैं। इसलिए उन्होंने द्रव्य को ईश्वर कहा है। द्रव्य को ईश्वर कहने का यह अर्थ नहीं है कि वह सगुण, साकार एवं व्यक्तित्वपूर्ण है। स्पिनोजा द्रव्य या ईश्वर को निर्गुण, निराकार एवं अमूर्त मानते हैं।

इसप्रकार द्रव्य स्पिनोजा के दर्शन में एक तत्व है और यह ईश्वर है। ईश्वर एक ऐसी सत्ता है जिसमें अनन्त गुण हैं और उसमें से प्रत्येक गुण एक अनादि एवं अनन्त सार को व्यक्त करता है। उन्होंने एक अन्य स्थान पर कहा है कि ईश्वर के अतिरिक्त और कोई द्रव्य न तो अस्तित्व रखता है और न सोचा जा सकता है (No other substance than God can either exist or to be conceived)।

स्पिनोजा के विचारों में ईश्वर को निर्गुण कहने का अर्थ उसका गुणरहित होना नहीं है, अपितु ईश्वर में तो असंख्य गुण होते हैं और प्रत्येक गुण उसकी असीमता को व्यक्त करते हैं। ईश्वर को निर्गुण कहने का अर्थ यही है कि उसमें सीमित गुणों का अभाव है। उदाहरण के लिए, यदि यह कहा जाये कि ईश्वर पालनकर्ता है, तो इससे यह अर्थ निकलता है कि वह संहारक नहीं है। जब सब कुछ ईश्वर ही है, तो संहार कैसे होगा? इसलिए

ईश्वर को किसी विशेष गुण से युक्त नहीं कहा जा सकता। इस सन्दर्भ में स्पिनोजा की प्रसिद्ध उक्ति है —

निर्धारण मात्र ही निषेध है।

(Every determination is negation.)

इस दृष्टि से स्पिनोजा ईश्वर को निर्गुण, निराकार (आकार-रहित) एवं व्यक्तित्वरहित कहते हैं। ईश्वर पूर्णतः स्वतन्त्र है तथा उस सृष्टि की रचना में उसका कोई प्रयोजन नहीं है। मनुष्य के निजी जीवन से वह पूर्णतः अलिप्त रहता है, अर्थात् मानव के सुख-दुःख के भावों से वह परे है। निर्गुण द्रव्य या ईश्वर के असंख्य गुण हैं। किन्तु मनुष्य उसके केवल दो ही गुणों से परिचित होता है। इसमें एक गुण चिन्तन (विचार) तथा दूसरा गुण विस्तार है। ये दोनों गुण मानव जीवन के अनुरूप हैं, मनुष्य का मन विचारयुक्त तथा शरीर विस्तारयुक्त होता है। इसप्रकार कहा जा सकता है कि ईश्वर एक विस्तृत एवं विचारयुक्त द्रव्य है।

विश्व ईश्वर का स्वभाव या सहजगुण है। जिसप्रकार सेब में लाली, दूध में सफेदी, मधु में मिठास है, वैसे ही ईश्वर विश्व का कारण है। स्पिनोजा ने कहा है कि विश्व ईश्वर का उसीप्रकार अनिवार्य परिणाम है, जैसे त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोण के बराबर होता है (Just as it is eternally followed from the nature of a triangle that its three angles are equal to two right angles)। इससे अर्थ निकलता है कि यह विश्व या सृष्टि ईश्वर की रचना नहीं है, किसी काल-विशेष में उन्होंने विश्व को नहीं बनाया है, बल्कि यह विश्व ईश्वर का स्वाभाविक परिणाम है। यह ईश्वर से

वैसे-ही अपृथक् है, जैसे सेब से लाली या मधु से मिठास या दूध से सफेदी को अलग नहीं किया जा सकता है।

स्पिनोजा ईश्वर एवं विश्व के बीच तादात्म्य सम्बन्ध को स्वीकार करते हैं। किन्तु ईश्वर के दो रूप हैं — (1) विश्व रूप (Natura Naturata) तथा (2) विश्वातीत रूप (Natura Naturans)। ईश्वर के 'विश्व रूप' में यह जगत् ईश्वर से अपृथक् है या उसी में समाया हुआ है। इसे ईश्वर का 'काल में स्थित' रूप भी कहा जा सकता है। ईश्वर के इस रूप को मनुष्य अपनी इन्द्रियों के माध्यम से काल में स्थित होकर जान सकता है। ईश्वर का दूसरा रूप विश्व से परे है जो काल में स्थित न होकर 'कालातीत रूप' है। मनुष्य इन्द्रियों के माध्यम से ईश्वर के इस रूप को नहीं जान पाता, केवल उसकी बुद्धि ईश्वर के कालातीत रूप को ग्रहण करती है।

इसप्रकार स्पिनोजा का ईश्वर-विचार एक तत्त्ववाद (Monism) का द्योतक है। यदि ईश्वर निरपेक्ष एवं स्वयंसिद्ध है, तो वह एक ही होगा। यह ईश्वर विश्व के कण-कण में व्याप्त है। विश्व का कोई हिस्सा ईश्वर-रहित नहीं है। इसलिए स्पिनोजा कहते हैं — "सब कुछ ईश्वर है तथा ईश्वर ही सब है" (All is God and God is all)। स्पिनोजा का यह ईश्वर-विचार सर्वेश्वरवाद (Pantheism) कहलाता है।

आलोचना — स्पिनोजा के द्रव्य या ईश्वर-विचार में मूल तत्त्व के स्वरूप को सुसंगत एवं तार्किक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। फिर भी इसमें अनेक त्रुटियाँ हैं। ये हैं —

(1) स्पिनोजा ने अपने विचार ज्यामितीय प्रणाली में प्रस्तुत किये हैं। किन्तु दर्शन एवं गणित का क्षेत्र भिन्न-

भिन्न है। मूल तत्त्व के स्वरूप को ज्यामितीय रूप में प्रस्तुत करना दोषपूर्ण है।

(2) स्पिनोजा एक ओर सृष्टि को ईश्वर की अभिव्यक्ति कहते हैं और दूसरी ओर वे ईश्वर को सृष्टि में समाया हुआ मानते हैं। ये दोनों बातें परस्पर विरोधी हैं।

(3) ईश्वर को एकमात्र सत्य स्वीकार करने से विश्व एवं मानव की स्वतन्त्रता समाप्त हो जाती है। ऐसी स्थिति में नैतिक मूल्यों को निर्धारित करना कठिन है। यदि सब कुछ नियत है एवं मानव में संकल्प की स्वतन्त्रता नहीं है, तो मानवीय कर्मों का मूल्यांकन कैसे हो सकता है।

(4) ईश्वर को निर्गुण एवं निराकार बतलाने से मानव की धार्मिक भावनाओं की संतुष्टि नहीं हो पाती। धार्मिक भावनाओं एवं इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए ऐसे ईश्वर की आवश्यकता होती है, जो मानव की करुण पुकार को सुन सके।

इसप्रकार स्पिनोजा के द्रव्य या ईश्वर-विचार में अनेक दोषों के रहने पर भी इसका महत्त्व है। वे ईश्वर के साथ भक्त एवं भगवान के सम्बन्ध की अपेक्षा 'बौद्धिक प्रेम' को स्वीकार करते हैं। सर्वत्र ईश्वर का दर्शन करना — उनके द्रव्य-विचार की विशेषता है।

——— X ——— X ———